महादेवी के साहित्य में छायावादी विचारधारा - एक विमर्शा

Mahadevi Ke Sahitya Me Chayavadi Vichardhara – Ek Vimarsha

***Dr.Babitha.**

B.M. Associate Professor and HOD of Hindi, S S M R V College, Bangalore.

भूमिका:-

बौद्ध धर्म के इस पुनर्जागरण ने हिंदी जान-मानस को भी प्रभावित किया। ईश्वरवाद और आत्मवाद के अनिच्छुक इस धर्म दर्शन के समन्वयवादी रूप ने आधुनिक हिंदी साहित्य को एक नयी स्फूर्ति और चेतना दी लेकिन फिर भी एक बात स्पष्ट है कि आरंभिक दौर के आधुनिक हिंदी युग के कवि और रचनाकार भले ही अपनी रचनाओं की पृष्ठभूमि के रूप में कुछ प्रेरणा ली हो पर उनकी रचनाओं पर बौद्ध दर्शन के मूलभूत दार्शनिक सिद्धान्तों का प्रभाव अत्यंत अल्प था और जो कुछ भी दार्शनिक पृष्ठभूमि इनके रचनाओं में परिलक्षित हुई वह बौद्ध धर्म के तुलना में बौद्ध दर्शन से कुछ हद तक साम्यता रखने वाले औपनिषदिक दर्शन के अधिक निकट थी।

आधुनिक हिंदी साहित्यकारों में मैथिलीशरण गुप्त, रामचंद्र शुक्ल, जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', सुमित्रा नंदन पंत, महादेवी वर्मा, हजारी प्रसाद द्विवेदी, चतुरसेन शास्त्री, राहुल सांकृत्यायन, 'अज्ञेय', यशपाल, रांगेय राघव और मोहन राकेश की कुछरचनायें बौद्ध दर्शन से प्रत्यक्षतः संबंध रखती हैं। महादेवी वर्मा की रचनाओं में बौद्ध धर्म के दुखवाद और करुणा के सिद्धांत का प्रभाव स्पष्टत रूप में देखा जा सकता है। इसी तरह छायावाद के एक अन्य स्तंभ निराला की रचनाओं में बौद्ध धर्म के पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग दिखता है।

छायावादी कवि को अज्ञात सत्ता के प्रति एक विशेष आकर्षण रहा है। वह प्रकृति के प्रत्येक पदार्थ में इसी सत्ता के दर्शन करता है। उसका इस अनंत के प्रति प्रमुख रूप से विहमय तथा जिज्ञासा का भाव है। इनका रहस्य जिज्ञासामूलक है, निराला तत्व ज्ञान के कारण, तो पंत प्राकृतिक सौन्दर्य से रहस्योन्मुख हुए। प्रेम और वेदना ने महादेवी जी को रहस्योन्मुख किया तो प्रसाद ने उस परमसत्ता को अपने बाहर देखा। महादेवी जी के काव्य में रहस्य साधना की दृढ़ता दृष्टिगत होती है। महादेवी के काव्य में रहस्यवाद के रमणीय दर्शन मिलते है-

सुनहरी आशाओं का छोर

बुलाएगा इसको अज्ञात

किसी स्मृति वीणा का राग

बना देगा इसको उद्‌भ्रांत।

प्रस्तुत पंक्तियों में विराट सत्ता के रहस्य को जानने की उत्सुकता महादेवी जी के मन में उत्पन्न होती हैं-

पर शेष नहीं होगी वह मेरे प्राणों की क्रीडा

तुमको पीड़ा में ढूंढा, तुममें ढूंढूगी पीड़ा।

महादेवी जी अपनी पीड़ा में भी अपने प्रिय को ही ढूँढती है, अतः छायावादी काव्य की अभिव्यजंना पद्धति भी नवीनता और सरसता लिए हुए है। छायावादी काव्य में जीवन की सूक्ष्म-निभूत स्थितियों को आकार प्राप्त हुआ, इसलिए छायावादी शैली में मानवीकरण का विशेष महत्व रहा है। महादेवी जी की मानवीकरण चित्रण से युक्त पक्तियां प्रस्तुत है-

झर चुके तारक-कुसुम जब

रश्मियों के रजत-पल्लव,

सन्धि में आलोक-तम की

क्या नही नभ जानता तब,

पार से , अज्ञात वासन्ती दिवस - रथ चल चुका है।

प्रस्तुत पंक्तियों में अर्थ के तीन पक्षों का एक साथ निर्वाह किया गया है। यहा प्रतिपाद्य तो है जीवन की साधना का वह अन्तिम क्षण जब इस लौकिक जीवन की समाप्ति के बाद एक लोकात्तर आनन्दमय चेतना का आभास होने लगता है, किन्तु इस अर्थ के लिए दोहरा अप्रस्तुत है यों कहना चाहिए कि अप्रस्तुत दर- अप्रस्तुत है। एक अप्रस्तुत है प्रातः काल का, जब तारे तथा चन्द्रमा की किरणें धूमिल होने लगती हैं और बासन्ती प्रकाश वाले सूर्य का रथ क्षितिज के उस ओर से आता दिखाई देता है तथा दूसरा अप्रस्तुत है पतझर की समाप्ति की बेला का, जब कुसुमों और पल्लवों के झर जाने के बाद बसन्त के आगमन की सूचना मिलने लगती है। आलोक और तम की सन्धि का प्रयोग मृत्यु के लिए हुआ है और नभ की चेतना के लिए। इस प्रकार अर्थगाम्भीर्य में समानता होने पर भी छायावादी काव्य पंक्तियों में अभिव्यंजना की सूक्ष्मता का वैशिष्ट्य भी देखने को सुलभ हैं।

महादेवी जी को तो वेदना की कवयित्री ही कहा जाने लगा। यही नहीं आधुनिक मीरा कहकर उनकी प्रेमभावना को चरम आध्यात्मिक स्तरर पर स्थापित कर दिया गया। वह अपने वेदना विह्वल आसुओं की तुलना घनसे करती हुई कहती हैं-

आंसुओं का कोप उर दृग अश्रु की टकसाल

तरल जलकण से बने घन सा क्षणिक मृदुगात।

'वेदना या दु:खवाद' भारतीय साहित्य के लिए कोई नवीन दर्शन नहीं है। वैदिक युग से 'दु:खवाद' भारतीय साहित्य में संबद्ध रहा है । षट् दर्शन, बौद्ध दर्शन, जैन दर्शन में वह गूँजती रही है। काव्यशास्त्रीय मूल्यों की दृष्टि से भी छायावाद प्राचीन सिद्धान्तों – विशेषकर रस-सिद्धांत के अनुरूप है और जहा तक दार्शनिक सिद्धान्तों का सम्बन्ध है, छायावादी काव्य सर्ववाद, कर्मवाद, वेदान्त शैव दर्शन, अद्वैतवाद, भक्ति आदि पुराने सिद्धान्तों को ही व्यक्त करता दिखायी देता है।

महादेवी जी ने छायावाद का मूल दर्शन सर्वात्मवाद को माना है और प्रकृति को उसका साधन। उनके छायावाद ने मनुष्य के हृदय और प्रकृति के उस सम्बन्ध में प्राण डाल दिए जो प्राचीन काल से बिम्ब प्रतिबिम्ब के रूप में चला आ रहा था। इनके आनुसार छायावाद की कविता प्रकृति के साथ रागात्मक संबंध स्थापित करके हमारे हृदय में व्यापक भावानुभूति उत्पन्न करती है और हम समस्त विश्व के उपकरणों से एकात्मभाव सम्बन्ध जोड़ लेते हैं। महादेवी के काव्य में करूणा और वेदना का व्यापक चित्रण मिलता हैं। महादेवी के गीतों में अनुभूति और विचारों में एकात्मकता प्राप्त होती है। कवयित्री स्वानुभूति को अपने काव्य में प्रस्तुत करने में सफल रही हैं। महादेवी के काव्य का मूल स्वर 'वेदना' है। काव्य की मूल प्रेरणा उनके हृदय का 'विषाद' और 'वेदना' है। कवयित्री को कविताएं मानवीय एवं आध्यत्मिक दोनों आधार भूमियों पर वेदना की धारा प्रवाहित करने की चेष्टा की गई है।

महादेवी में वेदना का आधिक्य है पर वह लौकिक नहीं, अपौरूषेय है। उनके दु:खवाद का दर्शन उदात्त है। उनकी काव्य वेदना आध्यात्मिक भी है। उसमें 'आत्मा' का 'परमात्मा' के प्रति तड़प् और प्रणय निवेदन है। कवि की आत्मा अपने प्रियतम का स्मरण करती हुई प्रतीत होती है। मीरा ने जिस प्रकार अपने ईश की उपासना सगुण रूप में की उसी प्रकार महादेवी जी ने उनकी अराधना निर्गुण रूप में की; यही कारण है कि महादेवी जी को 'आधुनिक मीरा' संज्ञा प्रदान की गई।

महादेवी के दु:खवाद पर बौद्ध दर्शन के सर्वदु:ख के सिद्धान्त का गहरा व स्पष्ट प्रभाव देखने को मिलता है। बुद्ध की विश्व मंगल की कामना, जो कि संसार के दुख, करूणा, वेदना, असहनीय दुर्दशा को देखकर और आत्मिक अनुभूति के माध्यम से बुद्ध के मन में उदीप्त हुई थी, जिसके कारण उन्होंने विश्व को भगवान द्वारा बनाई गई सृष्टि के दु:ख का अन्त करने व दु:खों के निवारण हेतु वैराग्य लिया। ऐसी ही उदात्त बुद्ध की विश्व मंगल की कामना से उद्धरित करूणा उनके काव्य का प्राणतत्व बन गयी है। तभी तो वह विरह रूपी कमल का जन्म वेदना में मानकर करूणा में उसका स्थायी निवास बताती है। महादेवी वर्मा के काव्य संग्रह 'नीरजा' की पंक्तियां प्रस्तुत हैं-

विरह का जलजात, जीवन, विरह का जलजात।

वेदना मे जन्म, करूणा में मिला आवास,

अश्रु चुनता दिवस इसका, अश्रु गिनती रात।

विरह का जलजात''।

बुद्ध के समान महादेवी भी वेदना, पीड़ा, दु:ख व करूणा के माध्यम से विश्व कल्याण की कामना करती हैं। दु:ख के प्रति इतनी आसक्ति है कि - वे बिना दु:ख के लक्ष्य प्राप्ति सम्भव ही नहीं मानती । दु:ख भाव की अतिशय प्रबलता के कारण वे अपने आराध्य देव को ही दु:ख का प्रतिरूप मान बैठती हैं।

कवयित्री ने अपने काव्य संग्रह 'यामा' में दु:ख के महत्व को उजागर करते हुए लिखा है - **''दु :ख मेरे निकट जीवन का ऐसा काव्य है, जो संसार को एक सूत्र में बांधने की क्षमता रखता है, एक बूंद ऑसू भी जीवन को अधिक उर्वर बनाये बिना नही रहता। मनुष्य सुख को अकेला भोगना चाहता है पर दु:ख सबको बाँट कर। विश्व जीवन में अपने**

जीवन को विश्व वेदना में अपनी वेदना को इस तरह मिला देना जैसे एक बूँद समुद्र में मिल जाती है सच्चे कवि की यही मोक्ष हैं।''

महादेवी स्वयं स्वीकार करती हैं कि – **"बचपन से ही महात्मा बुद्ध के प्रति भक्तिमय अनुराग होने के कारण उनके संसार को दुःखात्मक समझने वाले दर्शन से मेरा असमय ही परिचय हो गया था। अवश्य ही इस दुःखवाद को मेरे हृदय में एक नया जन्म लेना पड़ा..।"**

महादेवी ने अपने जीवन में दुःख के महत्व को भली – भांति समझ लिया है। उनका सम्पूर्ण जीवन ही वेदना में निमग्न प्रतीत होता है। उन्होने स्वीकार किया कि दुःख के माध्यम से न केवल अपने जीवन को वरन मानवता को भी सुखी तथा समृद्ध बनाया जा सकता है। यही लोकमंगल और लोककल्याण की भावना उनके काव्य को अनायास ही बौद्ध दर्शन से जोड़ देती हैं। महादेवी के अनुसार वेदना दुःखमूलक नहीं है। वह प्रिय तथा मुक्ति का साधन है। इसीलिए उनके काव्य में वेदना को प्रधान स्थान प्राप्त है और उनका काव्य दुःखवादी होते हुए भी मधुर संगीत के समान गुंजन उत्तपन्न करता है तथा परम आनन्द की अनुभूति प्रदान करता है। महादेवी ने अपने दुःखमय जीवन को ही पवित्र और शान्तिपूर्ण बनाकर मन को मंदिर मान लिया है-

''सूने मानस मंदिर में

सपनों की मुग्ध हसी में

आशा के आहवाहन में

बोते की चित्रपटी में।"

महादेवी की वेदनानुभूति मे वह स्वयं आराधिका हैं और उनके इष्टदेव चिर सुन्दर और असीम हैं। अतः उनका दुःख भौतिक न होकर आत्मिक प्रतीत होता है। कवयित्री अपने व्यक्तिगत जीवन की वेदना को उदात्त बनाना चाहती है। इसी उद्देश्य से उन्होने अपने जीवन के समस्त दुःख वेदना को अपने काव्य के माध्यम से अभिव्यक्त किया, जिससे स्पष्ट हो जाता है कि कवयित्री की विरहानुभूति की तीव्र अभिव्यक्ति का कारण एक यह भी है कि कवयित्री ने अपनी व्यक्तिगत वेदना को उदात्त बनाने का सफल प्रयास किया।

निष्कर्ष

अतः स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि वेदनानुभूति महादेवी के काव्य का प्रधान जीवन - दर्शन है। जगत और जीवन की निस्सरता, करूणा, दुख, वेदना, निराशा से व्यथित होकर उन्होंने दुःखवाद का सृजन किया। उनपर महात्मा बुद्ध के 'सर्वदुखस'' की भावना का प्रत्यक्ष प्रभाव दृष्टव्य होता है। निःसन्देह कहा जा सकता है कि महादेवी का जीवन - दर्शन और साहित्य सृजन विरह वेदना ओर प्रणय भावना की नीति से आप्लावित है।

संदर्भ ग्रंथ:-

- नीहार, महादेवी वर्मा, साहित्य भवन लिमिटेड, इलाहाबाद, 1955 , पृष्ठ 68
- वही, पृष्ठ 38

- दीपशिखा, महादेवी वर्मा, भारती भण्डार लीडर प्रेस, इलाहाबाद, 2011, पृष्ठ 67
- यामा, महादेवी वर्मा, भारती भण्डार लीडर प्रेस, इलाहाबाद, 2008, पृष्ठ 11
- नीरजा, महादेवी वर्मा, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2016, पृष्ठ 19